पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

रेत समाधि: एक सरहद गाथा

जोस्ना जोस

शोधार्थी, यूनिवर्सिटी कॉलेज पालयम

केरल विश्वविद्यालय, केरल

ईमेल: josnajose581996@gmail.com

शोध-सारांश: बुकर सम्मान से पुरस्कृत 'रेत समाधि' गीतांजलि श्री का किस्सागोई से युक्त बेहतरीन उपन्यास है। सरहद और औरत की गाथा को महीन और बारीक भाषा के प्रयोग से उन्होंने इसे कालजयी बना दिया है। यह उपन्यास पाठक को देश विभाजन से लेकर समकालीन कई मुद्दों पर विचार विमर्श करने को बाध्य करा देती है। सरहद दो मुल्कों के बीच का पुल होता है, उन्हें हम अलग नहीं कर सकते। बॉर्डर चाहे देश का हो, रिश्तों का हो, देह का हो, वह संगम स्थल बनकर रह जाता है। माँ का सरहद पार करके आना हर बॉर्डर को लांघना है। यह उपन्यास एक लंबे समय की दास्तान को हमारे सम्मुख खोलकर रखता है।

सूचक शब्द : माँ, बेटी, किन्नर, सरहद, परिवार, राजनीति।

मूल लेख

रेत समाधि वास्तव में चंद्र प्रभा देवी उर्फ चंदा की गाथा है। सदियों से चली आ रही स्त्री मर्यादा की मान्यताओं को तोड़कर उसे नई पहचान दी है, गीतांजलि श्री ने। अपनी भाषा को पहचान बनाकर उन्होंने साहित्य के विस्तृत फलक को छुआ है। हिंदी भाषा की किसी रचना को पहली बार बुकर सम्मान हासिल हुआ है। उनकी अद्भुत कथा-शैली और महीन भाषा ने इसके लिए उन्हें योग्य पाया गया।

यह कहानी 80 साल की उस विधवा की है, जिसने पति की मृत्यु के बाद अपने ही परिवार से पीठ कर ली है। बेटे के साथ रहते-रहते वह एक दिन गायब हो जाती है और थाने से मिल जाती है। बाद की ज़िंदगी वह अपनी बेटी के संग रहने लगती है और फिर से अपनों के साथ जीने लगती है। विभाजन के पहले जिस देश से वह आई थी वहाँ दोबारा अपनी बेटी की मदद से पहुँचती है और अपने पुराने शौहर से आखिरी बार मिलकर अपनी अधूरी कहानी को मुकम्मल बना देती है। सीमाओं की परवाह किए बिना पार करने की जुर्रत ने उन्हें रेत में समाधि लेने पर मजबूर कर दिया। अपनी सभी ख्वाहिशों को पूरा करके वह रेत में समाधि ले लेती है।

यह उपन्यास केवल एक मुद्दे को पाठकों के समक्ष नहीं रखता बल्कि जीवन के तमाम पहलुओं को उठाते हुए साझा एहसास प्रदान करने का काम करता है। बँटवारे की, सरहद की, बदलती मानवीय संवेदनाओं की, शहरी जीवन की, पारिवारिक संबंधों की, भाषा, साहित्य और कला की, सबाल्टर्न की, पर्यावरण की यहाँ तक कि भूमंडलीय बाज़ार तक के पटल को बिना किसी पूर्वाग्रह से गीतांजलि श्री ने दर्ज किया है। यह उपन्यास हमारी भाषा में हमारे समय की कथा कहता है।

माँ, बेटी और सरहद -यह तीनों पात्र उपन्यास में अपने-अपने वजूद और सत्ता को आखिर तक कायम रखते हैं। गीतांजलि श्री समय की नब्ज़ को पकड़ने वाली लेखिका हैं। इसलिए उनकी रचना अपने समय का दस्तावेज़ है। समाज की प्रत्येक गतिविधि पर उनकी नज़र है। मनुष्य आज जानवर से भी बदतर हाल में जी रहा है। लेखिका का मानना है कि "कीड़ों का कीड़ा होना ठीक है,मगर इंसानों का कीड़ा होना, दिल कलौंस जाता है।" (श्री, 2018, पृ. 19) हमारा समाज अर्से से पितृसत्तात्मक रहा है। घर में बड़े बेटे का चिल्लाना पुरुषों की इस वर्चस्विता को रेखांकित करता है। "चिल्लाना परंपरा है, बड़े बेटे का चिल्लाने का पुराना रिवाज़ है। मालिकाना ढंग से। रिवाज़ मुलम्मा है।" (श्री, 2018, पृ. 24) लेकिन इसके बीच माँ खामोशी से अपनी करामात दिखाती हैं, यह दूसरी बात है। पीठ उन्होंने अपने रिश्तों से की थी, इच्छाओं से नहीं। कुछ भी कर जाने को ठान लेती है। इसलिए तो रचना सभी मान्यताओं पर प्रश्न चिन्ह लगाती हुई नज़र आती है, खासकर स्त्री की आज़ादी और चाहत को लेकर।

नगरीय जीवन की अपनी विशेषता है। बेटे की चिंता है कि बड़े शहर में रिटायर होकर फ्लैट में जाने से किन-किन चीजों के लिए जगह निकालनी चाहिए। बालकनियों में गमले भर दें तो कपड़े और बाकी अनाप-शनाप के लिए जगह कैसे निकलेगी। शहर में खुद को 'फिट' करने की यह दुविधा आज हर कहीं दिखाई दे रही है। वे नहीं जानते कि शहर और घर बदल सकते हैं। स्मृतियाँ नहीं। अपनी मिट्टी की महक हमेशा पीछा करती है। बस दीवारों के रंग बदलते रहते हैं। दीवार नहीं। यह सत्य समय की चमक - धमक में लोग भूल बैठे हैं। दीवार का सशक्त किरदार बहुत कुछ सोचने के लिए हमें मजबूर कर देता है।

पारिवारिक संबंधों में आए बदलाव को लेखिका ने बारीकी से महसूस किया है। इसी का नतीजा उपन्यास में जगह-जगह दिखाई दे भी रहा है। आज जब खून के रिश्तों की गरमाहट कम हो रही है। "परिवार के हर सदस्य को पता है कि जो मुझमें वह किसी में नहीं और जो मुझमें नहीं वह होने लायक नहीं। ये कि मेरे पास दिमाग है, औरों के पास पैसा। और ये कि मेरा फायदा उठाया सबने, अब हम नहीं, बाकी करें।.... और ये कि हम दूर रह के भी रहमदिल, तुम वहीं हो पर कितने बेरुखे और ये कि हमेशा हम ही देते हैं, और आप हमेशा लेते हैं।" (श्री, 2018, पृ. 27)

रिश्तो में आई यह दरार पैसे की वजह से भी हो सकती है। बेटे को हमेशा चेक बुक और माँ की साइन की चिंता लगी रहती है। वह चाहता है कि अम्मा का पैसा सही जगहों में लगा देना चाहिए वरना बैंक में सड़ेगा। आज मनुष्य इतना बेखबर हो गया है कि उसे इतना नहीं मालूम कि किसके साथ कौन सा व्यवहार करना

चाहिए। लेखिका याद करती है, कभी ऐसा भी ज़माना था जहाँ पर एक इंसान अपनी भूमिका में रचा बसा था और जानता था कि किसके संग क्या सलूक करना है। यह हमारी समय की सबसे बड़ी समस्या है।

लेखिका की सतर्कता केवल बनते बिगड़ते रिश्ते को लेकर नहीं है बल्कि समाज को खतरे में डालने वाली प्रत्येक बात पर है। प्रतिदिन खतरे में पड़ रही हमारी संस्कृति की ओर भी वे चिंतित है। भाषा किसी भी जाति की पहचान है। पश्चिमी विचारधारा से प्रेरित होकर हम अपनी भाषा को महत्व नहीं दे रहे हैं। लेखिका खुद साहित्यकार है, इसलिए भाषा के प्रति इस खतरे से वाक़िफ भी है। “अपनी भाषा सीख लो, फिर चाहे मर्ज़ी जितनी और सीखो, क्योंकि साँस उसी से सधती है, नहीं तो उखड़ेगी और हंफहंफ करोगे जोकर लोग।” (श्री, 2018, पृ. 222) एंटोनियो ग्राम्स्की ने कहा था कि हर बोलने वाले की अपनी एक व्यक्तिगत भाषा होती है। आज हम अपनी ही भाषा को आशंका की दृष्टि से देख रहे हैं। हमारी भाषा कई उप भाषा और बोलियों से मिलकर बनी है। स्वतंत्रता के बाद हमारी संस्कृति पूर्णत: भारतीय संस्कृति नहीं रही। वह अंग्रेजों की संस्कृति से प्रेरित रही। आज भी हम इस मिश्रित संस्कृति में जी रहे हैं या यूं कहे कि हम ‘थर्ड स्पेस’ में जी रहे हैं। हमने पाश्चात्य संस्कृति को सब कुछ मान लिया है। हमारा हर रिफरेंस उन से शुरू होकर उन पर ही होता है। पश्चिम की यह नकल आए दिन हमें खाईं की ओर ले जा रही है।

अपने समय में घटित होने वाली कई घटनाओं का दृष्टांत गीतांजलि श्री ने हमारे सामने लाने का काम किया है। अस्पताल को लेकर रोज़ी की मान्यता है कि- “यहाँ बीमार को और बीमार करते हैं।” (श्री, 2018, पृ. 42-43) कहीं भी कोई भी सत्य से विमुख नहीं हुआ है। साहित्यकार का काम ही ऐसा है कि सच को बेखौफ दिखाना।

लेखिका खुद मानती हैं कि बाज़ारवाद से हम इतना त्रस्त है कि हमारा मन किसी भी बात पर टिकता नहीं। हम वही समझना चाहते हैं जो बाज़ार हमें समझाना चाहता है। बाज़ार का अतिक्रमण आम लोगों की ज़िंदगी में भी बढ़ गया है। बिना किसी सोच विचार के लोग आज बाज़ार में बिकने को तैयार हैं। बाज़ार का हमारे दिमाग पर कब्जा बर्बादी की तरफ का इशारा है। लेखिका विचार करती है कि शर्म का बाज़ार में अकाल है। अपनी संस्कृति तो किसी के भी ज़ेहन में नहीं है। आज ब्रांड के पीछे लोग भाग रहे हैं। “ जंगल किसी को नहीं पसंद, अगर पास में मौकडौनल्ड या हल्दीराम ना हो।”(श्री, 2018, पृ. 64) बाज़ार ने सभी दृष्टियों से मानव जीवन को घेर लिया है। बाज़ार की इस साज़िश को लखिका ने खुलकर प्रकट किया है।

पर्यावरण का संरक्षण और बचाव की चर्चा आज हर कहीं विद्यमान है। आए दिन प्रदूषण और गंदगी से भरी दुनिया का नक्शा बदल रहा है। पर्यावरण को लेकर चिंता आज हर साहित्यकार ज़ाहिर करते हैं। गीतांजलि श्री पर्यावरण के इस परिवर्तन पर दुख प्रकट करती हैं। आज प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। बेमौसम आपदाएँ आती रहती हैं। “पेड़ ठगा खड़ा रहेगा कि फलों को किधर बढ़ाये, पक्षी ठगे हवा में थम जाएँगे कि इधर बर्फ़ पिघलगी या उधर अभी सूखा होगा तो किधर उड़ें।” (श्री, 2018, पृ. 240) प्रदूषण का रोज़ का रोज़ भयानक बनते जाना आपत्ति का संकेत है।

शहरों में प्रदूषण को लेकर लेखिका का बयान देखिए “चारों तरफ़ के शहरों के नाले उसमें खुलते हैं और फैक्ट्री और नालों में तेल और फास्फोरस का ज़हरीला मिश्रण आग बनना चाहता है और बनेगा।” (श्री, 2018, पृ. 240) लेकिन इन सबके बावजूद लेखिका अपने किरदार के द्वारा प्रकृति की चिंता को दर्ज किया है। गीतांजलि श्री से पहले सरहद गाथाओं की समृद्ध परंपरा रही है। भीष्म साहनी, खुशवंत सिंह, राही मासूम रजा, मैत्रेयी पुष्पा, इंतजार हुसैन और कृष्णा सोबती जैसे साहित्य की महान प्रतिभाओं की परंपरा को गीतांजलि श्री ने इस उपन्यास के माध्यम से आगे बढ़ाया है। कई सारी कहानियों को एक साथ लेकर उन्होंने एक महान गाथा रची है। जिसमें हर किसी की भी अपनी खुद की गाथा छिपी है। दरअसल हर पुरानी घिसी-पिटी मान्यताओं के, सरहदों के प्रति प्रतिवाद और प्रतिरोध बनकर यह उपन्यास उतरा है। बुकर पुरस्कार के साथ यह कृति विश्व साहित्य की कोटि में आ चुका है। भारतीय भाषाओं की समृद्ध परंपरा को नई पहचान मिली है। अनुवाद साहित्य को एक नई उपलब्धि मिली है। अतः रेत में समाधि लेने से कहानियाँ खत्म नहीं होती। चंदा यहाँ खत्म नहीं होती। वह अपनी बेटी में साँस लेती रहेगी। हवा के झोंकों को एक मौका दो तो वह सब कुछ फिर से कुरेद देगी। बस हवा को अपनी सरहद को लाने की देर है।……

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. श्री, गीतांजलि. (2018). *रेत समाधि*, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.